मेरी खेती

Pages:- 1- 18 | www.merikheti.com | हिंदी | जुलाई 2021

मानसून सीजन में तेजी से बढ़ने वाली 5 अच्छी फसलें

ज्वार की खेती से पाएं दाना और चारा

अरहर दाल की खेती कैसे करे

अरंडी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

किसानों पर सरकार मेहरबान, किया २ करोड़ के लोन का ऐलान

भारत सरकार ने खरीफ फसलों का समर्थन मूल्य बढ़ाया

जानिए कैसे डालें बैंगन की नर्सरी

जानिए लौकी की उन्नत खेती कैसे करें

मूंगफली की खेती से किसान और जमीन दोनों को दे मुनाफा

www.merikheti.com Krishan@merikheti.com +91 766 8256 275

सभी किसान भाइयों को नमस्कार,

हमारे कई किसान भाई हमें मेरीखेती की मासिक पत्रिका निकालने के लिए बोलते थे. जिसको हमारे सलाहकार मंडल के सदस्यों द्वारा स्वीकार किया तथा मेरीखेती मासिक पत्रिका का पहला संस्करण निकाला. इस संस्करण को लाने में हमारे सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ.ओमवीर सिंह निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश, डॉ.उदय भान सिंह डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर राजस्थान,श्री दिलीप यादव जी, श्री तेजपाल प्रधान जी, श्री राकेश शर्मा जी, लेख संकलन. स्नेहा बिष्ट, डिजाइनर संजय सिंह आदि का सराहनीय सहयोग रहा. आप सभी किसान भाइयों से विनम्र आग्रह है की हमें अपने सुझाव देते रहें जिससे की हम इस पत्रिका को किसानो के लिए और उपयोगी बना सकें.

धन्यवाद,

टीम मेरीखेती

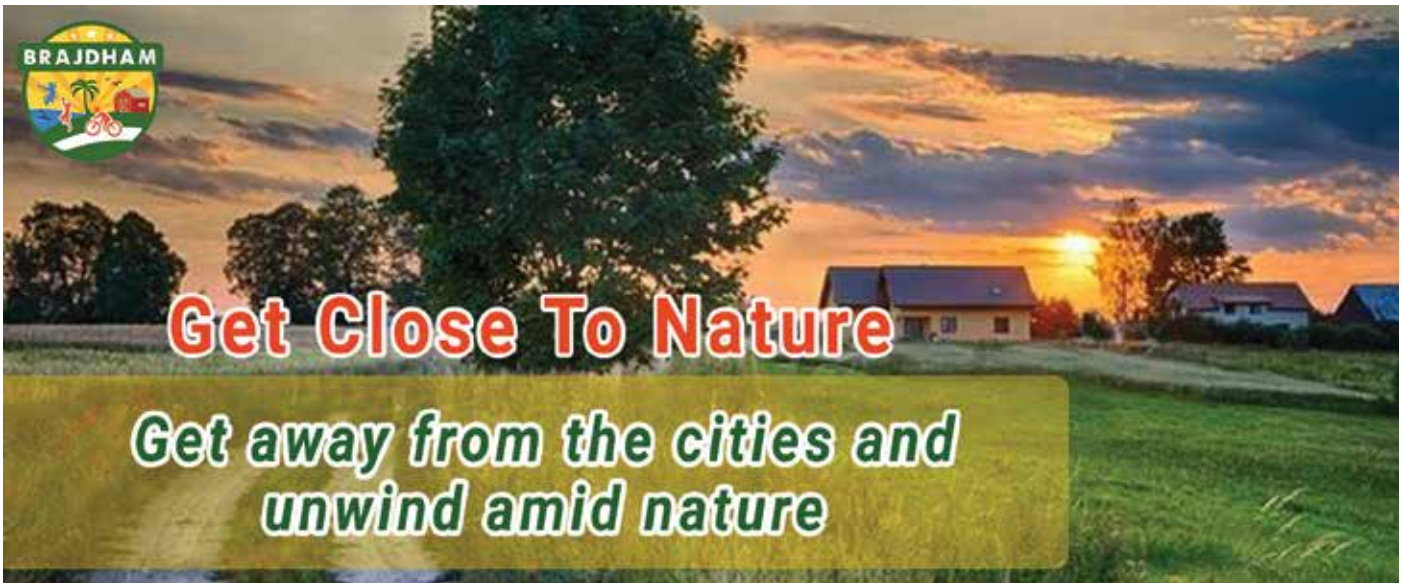

कृषि हमारी जीवन रेखा हैं

कृषि और किसान हमारी जीवनरेखा हैं। देश की 80 फीसद आबादी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से खेती से जुड़ी है। इतिहास के झरोखे में देखें तो पता चलता है कि मुगलों या अन्य आक्रान्ताओं ने भारत पर हमले उसी समय किए जब क्षेत्र विशेष में फसलें कटने को तैयार होतीं। यानी वह माल के साथ साथ यहां फसलों यानी किसानों को लूटने आते। किसान अंग्रेजों के दौर में भी लुटे और आज भी लुट रहे हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी लुटना उनकी नियति बन गई है। इस सब के बाद भी कोरोना जैसी महामारी के आधुनिक काल में कृषि क्षेत्र ने देश की जीडीपी को संजीवनी प्रदान की। जैव विविधता या विविधतापूर्ण खेती का क्षेत्र यहां बहुत ब्यापक है। जिस किसान का पूरा जीवन खेती में निकल गया उन्हें बहुत सी फसलों के बारे में सामान्य जानकारी भी नहीं होती। धान,गेहूं,गन्ना,कपास, मक्का, बाजरा जैसी सामान्य फसलों को छोड़कर भी अनेक मेवा, मसाले, औषधियों और फल आदि वाली अनेक फसलें यहां होती हैं जो कृषि और किसान को निरंतर सक्रिय रखती हैं। सभी फसलों की बुवाई के लिए जरूरी बीज, खाद, बाजार आदि के लिए सरकार को भी हर समय सजग रहने की जरूरत होती है लेकिन मोटी एवं सामान्य फसलों के लिए बाजार मुहैया कराने में भी हमारी सरकारों के हाथ पांव फूलते दिखाई देते हैं। कृषि और किसान भले ही सबको संबल प्रदान करते हैं लेकिन अधिकांशतया उन्हें निराशा का सामाना ही करना पड़ता है।

देश में दो सैकड़ा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थान एवं विश्वविद्यालय हैं लेकिन कहीं भी एक मॉडल तैयार नहीं हो पाया जिससे किसान आय बढ़ाने के लिए अपना सकें और खेती में अपने बच्चों को उद्यत कर परिवार की जरूरतों का सुख चैन से पालन कर सकें। यानी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का किसानों की आय दोगुनी करने का सपना पूरा हो सके। देश के मुखिया के संकल्प को पूरा करने को सरकारी नुमाइंदे संकल्पित नहीं दिखते।
एक दशक से फसलों का उत्पादन स्थिर प्राय: पड़ा है और आधुनिक तकनीकी यंत्रों, लेजर लेबलर, कम्बाइन हार्वेस्टर, रोटावेटर आदि की बाढ़ में लागत लगातार बढ़ रही है। डीजल की बढ़ती कीमत और बाजार में लागत के अनुरूप कृषि उत्पादों की कीमत न मिल पाने से किसानों की माली हालत सरकार के अनेक प्रयासों के बाद भी बहुत ज्यादा नहीं सुधरी है।

मेरी खेती का प्रयास

मेरी खेती डॉट कॉम का प्रयास किसानों को आधुनिक और पुरातन कृषि प्रक्रियाओं की सटीक जानकारी देना है। हम प्रयास करते हैं कि किसानों को भ्रामक चीजों से बचाया जाए।
उन्हें तकनीकी जानकारी से लेकर बाजार तक पहुंच बनाने की दिशा में हम निस्वार्थ भाव से सतत रूप से सजग रखते हैं।
संसाधन और सेवाओं के बदले किसानों से बगैर किसी शुल्क के हर संभव सहयोग की दिशा में मेरी खेती संलग्न है। आप सभी का जो प्यार और दुलार हमें मिला है उसके लिए हम हृदयतल की गहराई से आभारी हैं। आपके सुझाव, सफलता की कहानी और आलेख भी हमारा संबल बढ़ाएंगे।

— दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

मानसून सीजन में तेजी से बढ़ ने वाली ये 5 अच्छी फसलें

मानसून का मौसम किसान भाइयों के लिए कुदरती वरदान के समान होता है। मानसून के मौसम होने वाली बरसात से उन स्थानों पर भी फसल उगाई जा सकती है, जहां पर सिंचाई के साधन नहीं हैं। पहाड़ी और पठारी इलाकों में सिंचाई के साधन नही होते हैं। इन स्थानों पर मानसून की कुछ ऐसी फसले उगाई जा सकतीं हैं जो कम पानी में होतीं हों। इस तरह की फसलों में दलहन की फसलें प्रमुख हैं। इसके अलावा कुछ फसलें ऐसी भी हैं जो अधिक पानी में भी उगाई जा सकतीं हैं। वो फसलें केवल मानसून में ही की जा सकतीं हैं। आइए जानते हैं कि कौन-कौन सी फसलें मानसून के दौरान ली जा सकतीं हैं।

1- गन्ना की फसल

गन्ना कॉमर्शियल फसल है, इसे नकदी फसल भी कहा जाता है। गन्ने की फसल के लिए 32 से 38 डिग्री सेल्सियस का तापमान होना चाहिये। ऐसा मौसम मानसून में ही होता है। गन्ने की फसल के लिए पानी की भी काफी आवश्यकता होती है। उसके लिए मानसून से होने वाली बरसात से पानी मिल जाता है। मानसून में तैयार होकर यह फसल सर्दियों की शुरुआत मे कटने के लिए तैयार हो जाती है। फसल पकने के लिए लगभग 15 डिग्री सेल्सियश तापमान की आवश्यकता होती है। गन्ने की फसल केवल मानसून में ही ली जा सकती है। इसकी फसल तैयार होने के लिए उमस भरी गर्मी और बरसात का मौसम जरूरी होता है। गन्ने की फसल पश्चिमोत्तर भारत, समुद्री किनारे वाले राज्य, मध्य भारत और मध्य उत्तर और पूर्वोत्तर के क्षेत्रों में अधिक होती है। सबसे अधिक गन्ने का उत्पादन तमिलनाडु राज्य में होता है। देश में 80 प्रतिशत चीनी का उत्पादन गन्ने से ही किया जाता है। इसके अतिरिक्त अल्कोहल, गुड़, एथेनाल आदि भी व्यावसायिक स्तर पर बनाया जाता है। चीनी की अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक मांग को देखते हुए किसानों के लिए यह फसल अत्यंत लाभकारी होती है।

2- चावल यानी धान की फसल

भारत चावल की पैदावार का बहुत बड़ा उत्पादक देश है।देश की कृषि भूमि की एक तिहाई भूमि में चावल यानी धान की खेती की जाती है। चावल की पैदावार का आधा हिस्सा भारत में ही उपयोग किया जाता है। भारत के लगभग सभी राज्यों में चावल की खेती की जाती है। चावलों का विदेशों में निर्यात भी किया जाता है। चावल की खेती मानसून में ही की जाती है क्योंकि इसकी खेती के लिए 25 डिग्री सेल्सियश के आसपास तापमान की आवश्यकता होती है और कम से कम 100 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है। मानसून से पानी मिलने के कारण इसकी खेती में लागत भी कम आती है। भारत के अधिकांश राज्यों व तटवर्ती क्षेत्रों में चावल की खेती की जाती है। भारत में धान की खेती पारंपरिक तरीकों से की जाती है। इससे यहां पर चावल की पैदावार अच्छी होती है। पूरे भारत में तीन राज्यों पंजाब,पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक चावल की खेती की जाती है। पर्वतीय इलाकों में होने वाले बासमती चावलों की क्वालिटी सबसे अच्छी मानी जाती है। इन चावलों का विदेशों को निर्यात किया जाता है। इनमें देहरादून का बासमती चावल विदेशों में प्रसिद्ध है। इसके अलावा पंजाब और हरियाणा में भी चावल केवल निर्यात के लिए उगाया जाता है क्योंकि यहां के लोग अधिकांश गेहूं को ही खाने मे इस्तेमाल करते हैं। चावल के निर्यात से पंजाब और हरियाणा के किसानों को काफी आय प्राप्त होती है।

3- कपास की फसल

कपास की खेती भी मानसून के सीजन में की जाती है। कपास को सूती धागों के लिए बहुमूल्य माना जाता है और इसके बीज को बिनौला कहते हैं। जिसके तेल का व्यावसायिक प्रयोग होता है। कपास मानसून पर आधारित कटिबंधीय और उष्ण कटिबंधीय फसल है। कपास के व्यापार को देखते हुए विश्व में इसे सफेद सोना के नाम से जानते हैं।

कपास के उत्पादन में भारत विश्व का दूसरा बड़ा देश है। कपास की खेती के लिए 21 से 30 डिग्री सेल्सियश तापमान और 51 से 100 सेमी तक वर्षा की जरूरत होती है। मानसून के दौरान 75 प्रतिशत वर्षा हो जाये तो कपास की फसल मानसून के दौरान ही तैयार हो जाती है। कपास की खेती से तीन तरह के रेशे वाली रुई प्राप्त होती है। उसी के आधार पर कपास की कीमत बाजार में लगायी जाती है। गुजरात,महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, कर्नाटक,तमिलनाडु और उड़ीसा राज्यों में सबसे अधिक कपास की खेती होती है। एक अनुमान के अनुसारपिछले सीजन में गुजरात में सबसे अधिक कपास का उत्पादन हुआ था। अमेरिका भारतीय कपास का सबसे बड़ा आयातक है। कपास का व्यावसायिक इस्तेमाल होने के कारण इसकी खेती से बहुत अधिक आय होती है।

4 - मक्का की फसल

मक्का की खेती पूरे विश्व में की जाती है। हमारे देश में मक्का को खरीफ की फसल के रूप में जाना जाता है लेकिन अब इसकी खेती साल में तीन बार की जाती है। वैसे मक्का की खेती की अगैती फसल की बुवाई मई माह में की जाती है। जबकि पारम्परिक सीजन वाली मक्के की बुवाई जुलाई माह में की जाती है। मक्का की खेती के लिए उष्ण जलवायु सबसे उपयुक्त रहती है। गर्म मौसम की फसल है और मक्का की फसल के अंकुरण के लिए रात-दिन अच्छा तापमान होना चाहिये। मक्के की फसल के लिए शुरू के दिनों में भूमि में अच्छी नमी भी होनी चाहिए। फसल के उगाने के लिए 30 डिग्री सेल्सियश का तापमान जरूरी है। इसके विकास के लिए लगभग तीन से चार माह तक इसी तरह का मौसम चाहिये। मक्का की खेती के लिए प्रत्येक 15 दिन में पानी की आवश्यकता होती है।मक्का के अंकुरण से लेकर फसल की पकाई तक कम से कम 6 बार पानी यानी सिंचाई की आवश्यकता होती है अर्थात मक्का को 60 से 120 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है। मानसून सीजन में यदि पानी सही समय पर बरसता रहता है तो कोई बात नहीं वरना सिंचाई करने की आवश्यकता होती है। अन्यथा मक्का की फसल कमजोर हो जायेगी। भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, कर्नाटक में सबसे अधिक मक्का की खेती होती है। छत्तीसगढ, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, जम्मू कश्मीर और हिमाचल में भी इसकी खेती की जाती है।

5-सोयाबीन की फसल

सोयाबीन ऐसा कृषि पदार्थ है, जिसका कई प्रकार से उपयोग किया जाता है। साधारण तौर पर सोयाबीन को दलहन की फसल माना जाता है। लेकिन इसका तिलहन के रूप में बहुत अधिक प्रयोग होने के कारण इसका व्यापारिक महत्व अधिक है। यहां तक कि इसकी खल से सोया बड़ी तैयार की जाती है, जिसे सब्जी के रूप में प्रमुखता से इस्तेमाल किया जाता है। सोयाबीन में प्रोटीन, कार्बोहाइडेट और वसा अधिक होने के कारण शाकाहारी मनुष्यों के लिए यह बहुत ही फायदे वाला होता है। इसलिये सोयाबीन की बाजार में डिमांड बहुत अधिक है। इस कारण इसकी खेती करना लाभदायक है। सोयाबीन की खेती मानसून के दौरान ही होती है। इसकी बुवाई जुलाई के अन्तिम सप्ताह में सबसे उपयुक्त होती है। इसकी फसल उष्ण जलवायु यानी उमस व गर्मी तथा नमी वाले मौसम में की जाती है। इसकी फसल के लिए 30-32 डिग्री सेल्सियश तापमान की आवश्यकता होती है और फसल पकने के समय 15 डिग्री सेल्सियश के तापमान की जरूरत होती है। इस फसल के लिए 600 से 850 मिलीमीटर तक वर्षा चाहिये। पकने के समय कम तापमान की आवश्यकता होती है।

अरंडी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

किसान भाइयों, अरंडी एक औषधीय वानस्पतिक तेल का उत्पादन करने वाली खरीफ की मुख्य व्यावसायिक फसल है। कम लागत में होने वाली अरंडी के तेल का व्यावसायिक महत्व होने के कारण इसको नकदी फसल भी कहा जा सकता है। किसान भाइयों अरंडी की फसल का आपको दोहरा लाभ मिल सकता है। इसकी फसल से पहले आप तेल निकाल कर बेच सकते हैं। उसके बाद बची हुई खली से खाद बना सकते हैं। इस तरह से आप अरंडी के खेती करके दोहरा लाभ कमा सकते हैं। आइये जानते हैं कि अरंडी की खेती कैसे की जाती है।

भूमि व जलवायु

अरंडी की फसल के लिए दोमट व बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है लेकिन इसकी फसल पीएच मान 5 से 6 वाली सभी प्रकार की मृदाओं में उगाई जा सकती है। अरंडी की फसल ऊसर व क्षारीय मृदा में नहीं की जा सकती। इसकी खेती के लिए खेत में जलनिकास की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिये अन्यथा फसल खराब हो सकती है।

अरंडी की खेती विभिन्न प्रकार की जलवायु में भी की जा सकती है। इसकी फसल के लिए 20 से 30 सेंटीग्रेट तापमान की आवश्यकता होती है। अरंडी की खेती के लिए अधिक वर्षा यानी अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि इसकी जड़ें गहरी होतीं हैं और ये सूखा सहन करने में सक्षम होतीं हैं। पाला अरंडी की खेती के लिए नुकसानदायक होता है। इससे बचाना चाहिये।

खेत की तैयारी कैसे करें

अरंडी के पौधे की जड़ें काफी गहराई तक जातीं हैं , इसलिये इसकी फसल के लिए गहरी जुताई करनी आवश्यक होती है। जो किसान भाई अरंडी की अच्छी फसल लेना चाहते हैं वे पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें। उसके बाद दो तीन जुताई कल्टीवेटर या हैरों से करें तथा पाटा लगाकर खेत को समतल बना लें। किसान भाइयों सबसे बेहतर तो यही होगा कि खेत में उपयुक्त नमी की अवस्था में जुताई करें। इससे खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जायेगी और खरपतवार भी नष्ट हो जायेगा। इस तरह खेत को तैयार करके एक सप्ताह तक खुला छोड़ देना चाहिये। जिससे पूर्व फसल के कीट व रोग धूप में नष्ट हो सकते हैं।

अरंडी की मुख्य उन्नत किस्म

अरंडी की मुख्य उन्नत किस्मों मे जीसीएच-4,5, 6, 7 व डीसीएच-32, 177 व 519, ज्योति, हरिता, क्रांति किरण, टीएमवी-6, अरुणा, काल्पी आदि हैं।

कब और कैसे करें बुआई

अरंडी की फसल की बुआई अधिकांशतः

जुलाई और अगस्त में की जानी चाहिये। किसान भाई अरंडी की फसल की खास बात यह है कि मानसून आने पर खरीफ की सभी फसलों की खेती का काम निपटाने के बाद अरंडी की खेती आराम से कर सकते हैं। अरंडी की बुआई हल के पीछे हाथ से बीज गिराकर की जा सकती है तथा सीड ड्रिल से भी बुआई की जा सकती है। सिंचाई वाले क्षेत्रों अरंडी की फसल की बुआई करते समय किसान भाइयों को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि लाइन से लाइन की दूरी एक मीटर या सवा मीटर रखें और पौधे से पौधे की दूरी आधा मीटर रखें तो आपकी फसल अच्छी होगी। असिंचित फसल के लिए लाइन और पौधों की दूरी कम रखनी चाहिये। इस तरह की खेती के लिए लाइन से लाइन की दूरी आधा मीटर या उससे थोड़ी ज्यादा होनी चाहिये और पौधों से पौधों की दूरी भी लगभग इतनी ही रखनी चाहिये।

कितना बीज चाहिये

किसान भाइयों अरंडी की फसल के लिए बीज की मात्रा , बीज क आकार और बुआई के तरीके और भूमि के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है। फिर भी औसतन अरंडी की फसल के लिए प्रति हेक्टेयर 12 से 15 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

छिटकवां बुआई में बीज अधिक लगता है यदि इसे हाथ से एक-एक बीज को बोया जाता है तो प्रतिहेक्टेयर 8 किलोग्राम के लगभग बीज लगेगा। किसान भाइयों को चाहिये कि अरंडी की अच्छी फसल लेने के लिए उन्नत किस्म का प्रमाणित बीज लेना चाहिये। यदि बीज उपचारित नहीं है तो उसे उपचारित अवश्य कर लें ताकि कीट एवं रोगों की संभावना नहीं रहती है।

भूमिगत कीटों और रोगों से बचाने के लिए बीजों को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रतिकिलोग्राम पानी से घोल बनाकर बीजों को बुआई से पहले भिगो कर उपचारित करें।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

किसान भाइयों खाद और उर्वरक काफी महंगी आती हैं इसलिये किसी भी तरह की खेती के लिए आप अपनी भूमि का मृदा परीक्षण अवश्य करवा लें और उसके अनुसार आपको खाद और उर्वरक प्रबंधन की अच्छी जानकारी मिल सकेगी। इससे आपका पैसा व समय दोनों ही बचेगा। खेती की लागत कम आयेगी। इसी तरह अरंडी की खेती के लिए जब आप खाद व उर्वरकों का प्रबंधन करें तो मिट्टी की जांच के बाद बताई गयी खाद व उर्वरक की मात्रा का प्रयोग करें।

अरंडी की खेती के लिए उर्वरक का अच्छी तरह से प्रबंधन करना होता है। अच्छे खाद व उर्वरक प्रबंधन से अरंडी के दानों में तेल का प्रतिशत काफी बढ़ जाता है। इसलिये इस खेती में किसान भाइयों को कम से कम तीन बार खाद व उर्वरक देना होता है। अरंडी चूंकि एक तिलहन फसल है, इसका उत्पादन बढ़ाने व बीजों में तेल की मात्रा अधिक बढ़ाने के लिए बुआई से पहले 20 किलोग्राम सल्फर को 200 से 250 किलोग्राम जिप्सम मिलाकर प्रति हेक्टेयर डालना चाहिये। इसके बाद अरंडी की सिंचित खेती के लिए 80 किलो ग्राम नाइट्रोजन और 40 किलो फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करना चाहिये तथा असिंचित खेती के लिए 40 किलोग्राम नाइट्रोजन और 20 किलोग्राम फास्फो. रस का इस्तेमाल किया जाना चाहिये। इसमें से खेत की तैयारी करते समय आधा नाइट्रोजन और आधा किलो फास्फोरस का प्रति हेक्टेयर के हिसाब से डालना चाहिये। शेष आधा भाग 30 से 35 दिन के बाद वर्षा के समय खड़ी फसल पर डालना चाहिये।

सिंचाई प्रबंधन

अरंडी खरीफ की फसल है, उस समय वर्षा का समय होता है। वर्षा के समय में बुआई के डेढ़ से दो महीने तक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। इस अवधि में पानी देने से जड़ें कमजोर हो जाती है, जो सीधा फसल पर असर डालती है। क्योंकि अरंडी की जड़ें गहराई में जाती हैं जहां से वह नमी प्राप्त कर लेतीं हैं। जब अरंडी के पौधों की जड़ें अच्छी तरह से विकसित हो जायें और जमीन पर अच्छी तरह से पकड़ बना लें और जब खेती की नमी आवश्यकता से कम होने लगे तब पहला पानी देना चाहिये। इसके बाद प्रत्येक 15 दिन में वर्षा न होने पर पानी देना चाहिये। यदि सिंचाई के लिए टपक पद्धति हो तो उससे इसकी सिंचाई करना उत्तम होगा।

खरपतवार प्रबंधन

अरंडी की फसल में खरपतवार का प्रबंधन शुरुआत में ही करना चाहिये। जब तक पौधे आधे मीटर के न हो जायें तब तक समय-समय पर खरपतवार को हटाना चाहिये तथा गुड़ाई भी करते रहना चाहिये। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए एक किलोग्राम पेंडीमेथालिन को 600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के दूसरे या तीसरे दिन छिड़काव करने से भी खरपतवार का नियंत्रण होता है। लेकिन 40 दिन बाद एक बार अवश्य ही निराई गुड़ाई करवानी चाहिये।

कीट-रोग एवं उपचार

अरंडी की फसल में कई प्रकार के रोग एवं कीट लगते हैं। उनका समय पर उपचार करने से फसल को बचाया जा सकता है। आईये जानते हैं कि कौन से कीट या रोग का किस प्रकार से उपचार किया जाता है:-

1- **जैसिड कीट:** अरंडी की फसल में जैसिड कीट लगता है। इसका पता लगने पर किसान भाइयों को मानोक्रोटोफॉस 36 एस एल को एक लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव कर देना चाहिये। इससे फसल का बचाव हो जाता है।

2. **सेमीलूपर कीट:**

इसकीट का प्रकोप सर्दियों में अक्टूबर-नवम्बर के बीच होता है। इस कीट को नियंत्रित करने के लिए 1 लीटर क्यूनालफॉस 25 ईसी , लगभग 800 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रतिहेक्टेयर में फसल पर छिड़काव करने से कीट पर नियंत्रण हो जाता है।

3- **बिहार हेयरी केटरपिलर:**

यह कीट भी सेमीलूपर की तरह सर्दियों में लगता है और इसके नियंत्रण के लिए क्यूनालफॉस का घोल बनाकर खड़ी फसल पर छिड़काव करना चाहिये।

4- **उखटा रोग:**

उखटा रोग से बचाव के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडि 10 ग्राम प्रतिकिलोग्राम बीज का बीजोपचार करना चाहिये तथा 2.5 ट्राइकोडर्मा को नम गोबर की खाद के साथ बुवाई से पूर्व खेत में डालना अच्छा होता है।

पाले से बचाव इस तरह करें

अरंडी की फसल के लिए पाला सबसे अधिक हानिकारक है। किसान भाइयों को पाला से फसल को बचाने के लिए भी इंतजाम करना चाहिये। जब भी पाला पड़ने की संभावना दिखाई दे तभी किसान भाइयों को एक लीटर गंधक के तेजाब को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रतिहेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करा चाहिये। यदि पाला पड़ जाये और फसल उसकी चपेट में आ जाये तो 10 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से यूरिया के साथ छिड़काव करें। फसल को बचाया जा सकता है।

कब और कैसे करें कटाई

अरंडी की फसल को पूरा पकने का इंतजार नहीं करना चाहिये। जब पत्ते व उनके डंठल पीले या भूरे दिखने लगें तभी कटाई कर लेनी चाहिये क्योंकि फसल के पकने पर दाने चिटक कर गिर जाते हैं। इसलिये पहले ही इनकी कटाई करना लाभदायक रहेगा। अरंडी की फसल में पहली तुड़ाई 100 दिनों के आसपास की जानी चाहिये। इसके बाद हर माह आवश्यकतानुसार तुड़ाई करना सही रहता है।

पैदावारें

अरंडी की फसल सिंचित क्षेत्र में अच्छे प्रबंधन के साथ की जाये तो प्रतिहेक्टेयर इसकी पैदावार 30 से 35 क्विंटल तक हो सकती है जबकि असिंचित क्षेत्र में 15 से 23 क्विंटल तक प्रतिहेक्टेयर पैदावार मिल सकती है।

अरहर दाल की खेती कैसे करे

अरहर दाल की खेती कैसे करे

अरहर की दाल घर से लेकर होटल, ढाबों तक हर जगह पसंदी की जाती है। इसकी खपत भी खूब होती है। अच्छे और गुणवत्ता युक्त उत्पादन के लिए अरहर की उन्नत खेती के तौर तरीके जानाना आवश्यक है। यूं तो किसान इसकी खेती करते आ रहे हैं लेकिन अब कम समय में पकने वाली और अरहर के बाद दूसरी फसलें ले सकने की समय सीमा वाली किस्में भी आ गई हैं। इनकी जानकारी होना किसानों के लिए आवश्यक है।

अरहर की खेती कब की जाती है

अरहर की कम समय में पकने वाली किस्मों के विकसित होने से अरहर के बाद रबी सीजन की कई फसलें लेना आसान हुआ है। इससे किसनों की माली हालत सुधारने की दिशा में सुधार हुआ है। अरहर की खेती के बाद किसान बाजरा, ज्वार, मक्का, तिल, सोयाबीन, उडद, मूंग आदि की फसल ले सकते हैं। इसके अलावा अरहर की खेती के बाद फसल चक्र की बात करें तो अरहर के बाद गेहूं, अरहरकृगेहूंकृमूंग, अरहरकृ गन्ना, ग्रीष्म मूंगकृ अरहर एवं गेहूं, अति अगेती अरहरकृआलू एवं उडद के अलावा अरहरकृउडदकृमसूर या तारामीरा जैसी फसलों का चक्र बनाकर साल भर पैसे का चक्र बनाया जा सकता है। दालों में अरहर की दाल सबको भाती है और इसकी कीमत भी ठीक ठाक मिलती है। इसकी बिजाई जूनकृजुलाई में की जाती है।

अरहर की खेती के लिए भूमि का चुनाव

अरहर विभिन्न प्रकार की भूमि में लगाया जा सकता है। अरहर की खेती के लिए हल्की रेतीली दोमट या मध्यम भूमि जिसमें प्रचुर मात्रा में स्फुर तथा जिसका पी.एच. मान 7-8 के बीच में हो व समुचित जल निकासी वाली हो इसके लिये सर्वोत्तम होती है।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार

उन्नत किस्मों का बीज 18-20 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से बुआई करें।

मृदा जनित रोगों से बचाव के लिए बीज को फफूंदनाशक दवा थाइरम या कार्बेन्डाजिम को 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर उपचारित करें। तत्पश्चात, बीज को राइजोबियम कल्चर 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करें। 50 ग्राम गुड़ या चीनी को 1-2 लीटर पानी में घोलकर उबाल लें। घोल के ठंडा होने पर उसमें 200 ग्रा. राइजोबियम कल्चर मिला दें। इस कल्चर में 10 किलोग्राम बीज डाल कर अच्छे से मिला लें ताकि प्रत्येक बीज पर कल्चर का लेप चिपक जाये। बीज को कल्चर से उपचरित करने के बाद छाया में सुखाकर शीघ्र बुवाई करें। उपचारित बीज को कभी भी धूप में न सुखायें।

अरहर की उच्च उपज किस्म

भारत वर्ष के उत्तरी क्षेत्रों के लिए अनेक किस्में विकसित हो चुकी हैं। क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप प्रजाति का चयन करना चाहिए। इन सभी किस्मों की औसत उजप 20 से 25 कुंतल प्रति हैक्टेयर तक मिलती है।

उत्तर पश्चिमी क्षेत्र विशेषकर पंजाब के लिए पीपीएचकृ4 किस्म की हाइ. ब्रिड प्रजाति अच्छी है। उत्तर प्रदेश एवं हरियाणा राज्य के लिए पूसा 992 एसडी सभी क्षेत्रों के लिए, पंजाब और उत्तरी राजस्थान हेतु पूसा 99 संपूर्ण क्षेत्र, पूसा 2001 एवं 2002 संपूर्ण क्षेत्र, आजाद एलडीकृयूपीकृबिहार, विरसा एमडी किम बिहार के पहाड़ी इलाके, डब्ल्यूआर किस्म यूपी बिहार, पूसाकृ9 संपूर्ण क्षेत्र, नरेन्द्र अरहर पूर्वी उत्तर प्रदेश, श्वेताकृपश्चिम बंगाल, जागृति संपूर्ण क्षेत्र, आईसीपीएलकृ मैदानी भाग, आईसीपीएच हाइब्रिड संपूर्ण क्षेत्र में बुवाई हेतु उपयुक्त हैं। कई किस्में रोग रोधी भी हैं। अगेती किस्मों में जून में बोने को पारस, यूपीएस 120, पूसा 992 एवं टीकृ 21 जुलाई में बोने के लिए बहार, अमर, नरेन्द्र , आजाद, पूसा 9, मालवीय विकास, मालवीय चमत्कार, नरेन्द्र अरहर 2 जैसी अनेक किस्में हैं। नई अगेती प्रजाति में प्रजाति पंत अरहर-421 को पश्चिमी यूपी, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड के मैदानी हिस्से में उगाया जाएगा।

अरहर की बुआई का समय एवं विधि

शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुआई सिंचित क्षेत्रों में जून के प्रथम पखवा. ड़े तथा मध्यम देर से पकने वाली प्रजातियों की बुआई जून के द्वितीय पखवाड़े में करें। बुआई सीडड्रिल या हल के पीछे चोंगा बांधकर पंक्तियों में करें। ऐसे खेत जिनमे जल भराव की समस्या हो उनमे बुवाई के लिए कूड़ एवं पंक्ति विधि उपयुक्त होती है। शीघ्र पकने वाली जातियों के लिये पंक्तियों के बीच की दूरी 30-45 सेण्टीमीटर तथा पौधे से पौधे के बीच की दूरी 10-15 सेण्टीमीटर, मध्यम तथा देर से पकने वाली जातियों के लिये 60-75 सेण्टीमीटर कतार से कतार तथा पौधे से पौधे की दूरी 20-25 सेण्टीमीटर रखते हैं।

अरहर के लिए उर्वरक

अरहर की फसल को रोगों से बचाव के लिए एवं पैदावार बढ़ाने के लिए खाद और उर्वरक का प्रयोग हमेशा मिट्टी की जांच के बाद ही करें। मृदा परीक्षण के आधार पर समस्त उर्वरक अंतिम जुताई के समय हल के पीछे कूड़ में बीजों से 2 सेण्टीमीटर की गहराई व 5 सेण्टीमीटर साइड में देना सर्वोत्तम रहता है। प्रति हेक्टर 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 केजी फास्फोरस, 20 केजी पोटाश व 20 केजी गंधक की आवश्यकता होती है। जिन क्षेत्रों में जस्ता की कमी हो वहां पर 25 केजी जिंक सल्फेट प्रयोग करें। नाइट्रोजन एवं फस्फोरस की कमी समस्त भूमियों में होती है।

सिंचाई एवं जल निकास

जहां सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो वहां पर बारिश न होने पर एक हल्की सिंचाई फूल आने पर व दूसरी फलियां बनने की अवस्था पर करने से पैदावार में बढ़ोतरी होती है। अधिक अरहर उत्पादन के लिए खेत में उचित जल निकास का होना प्रथम शर्त है अतः निचले एवं अधो जल निकास की समस्या वाले क्षेत्रों में मेड़ों पर बुवाई करना उत्तम रहता है।

अरहर में खरपतवार नियंत्रण

प्रथम 60 दिनों में खेत में खरपतवार की मौजूदगी अत्यन्त नुकसानदायक होती है। इसकी खुरपी से दो बार निराई करें। प्रथम बुवाई के 25-30 दिन बाद एवं द्वितीय 45-60 दिन बाद खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के साथ मृदा वायु-संचार होता है। पेन्डी. मिथालिन 1.25 कि.ग्रा. सक्रिय तत्वद है. की दर से बुवाई के बाद 3 दिनों के अंदर प्रयोग करने से खरपतवार खेत में नहीं उगता है।

भण्डारण

भण्डारण हेतु नमी का प्रतिशत 10-11 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। भण्डारण में कीटों से सुरक्षा हेतु एल्यूमीनियम फास्फाइड की 2 गोली प्रति टन प्रयोग करें।

बैंगन की खेती साल भर दे पैसा

बैंगन का सब्जियों में प्रमुख स्थान है। यह हर तरह की पर्यावरणीय परिस्थितियों में और साल भर उगाई जाने वाली फसल है। आयुर्वेद के अनुसार यह यकृत समस्याओं को दूर करने में सहायक है। सफेद बैंगन मधुमेह के मरीजों के लिए लाभप्रद रहता है। इसमें विटामिन ए, बी व सी प्रचुर मात्रा में मिलते है। बैंगन की मांग अधिक रहने के कारण किसानों को इसका बाजार भाव ठीक मिल रहा है। इसकी खेती काफी लाभदायक साबित हो रही है। वर्ष 2015-16 में क्षेत्रफल, उत्पादन व उत्पादकता भारत में क्रमशः 663000 हैक्टेयर, 12515000 मैट्रिक टन एवं 18.9 मैट्रिक टन था।इसकी उत्पाद. कता को बढ़ाने की काफी गुंजाइश है।

किस्में लम्बे फल-

पूसा हाईब्रिड़-5 कांटे रहित, औसत वजन 100 ग्राम, औसत पैदावार 500 क्विण्टलह हैक्टेयर ,अर्का आनन्द (एफ-1) हरे फल, 20-24 सेमी लम्बे, 55-65 ग्राम फल का वजन, 4-5 फल ह गुच्छे में,

जानिए कैसे डालें बैंगन की नर्सरी

600-650 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक पैदावार, जीवाणु मुरझान प्रति. रोधी। अन्य किस्में काशी कोमल, अर्काशील, अर्का केशव, अर्का निधि, अर्का शिरिश।

अन्य किस्में- पूसा उपकार, पूसा अंकुर (60-80 ग्राम वजनी छोटे फल), काशी प्रकाश, काशी संदेश (एफ-1)

अण्डाकार फल:- पूसा उत्तम, पूसा बिन्दु (छोटे फल), पूसा अनमोल (एफ-1), अर्का नवनीत (एफ-1, 650 से 700 क्विण्टल ह हैक्टेयर तक पैदावार)।

जलवायु:

यह गर्म मौसम की फसल है, बहुत अधिक तापक्रम पर फल विकृत हो जाते हैं और पत्तियां झड़ जाती है। बीजों का अंकुरण 250 सेन्टीग्रेड तापक्रम पर उत्तम होता है।

भूमि एवं तैयारी:-

हल्की बुलई से लेकर चिकनी मिट्टी तक में इसकी खेती संभव है। दोमट व बलुई दोमट मिट्टी जिनकी उर्वराशक्ति उत्तम, गहरी तथा जल निकास युक्त मृदाएं उत्तम रहती हैं। बैंगन प्रतिकूल जलवायु के लिए तुलनात्मक रूप से सहनशील पौधा है।

खाद एवं उर्वरक:- अधिक पोषक तत्वों की माग वाली लम्बी अवधि की फसल है। सड़ी हुई गोबर की खाद 200-250 क्विंटल ह हैक्टेयर भूमि की तैयारी के समय मिलायें। फसल को 100-120 किलो नाइट्रोजन 50-60 किलो फास्फोरस व पोटाष प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता पड़ती है। भूमि की जांच के आधार पर उप. लब्ध पोषक तत्वों को ध्यान में रखते हुए बाकी मात्रा दें।

सम्पूर्ण फास्फोरस, पोटाश व आधा नाइट्रोजन रोपाई पूर्व जमीन में मशीन से ऊर कर दें। आधी नाइट्रोजन को तीन बार में रोपाई के 30, 45 व 60 दिन बाद देते हैं। सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक, लौह, बोरोन की कमी होने पर 1 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करना लाभदायक रहता है। पानी में घुलनशील पोषक तत्व जैसें एन.पी. के. (19:19:19 प्रतिशत) की 5-10 ग्राम मात्रा प्रतिलीटर रोपाई के 45 व 75 दिन बाद छिड़कने से भी पैदावार बढ़ती है।

फास्फोरस, पोटाष व आधा नाइट्रोजन रोपाई पूर्व जमीन में मशीन से दें। आधी नाइट्रोजन को तीन बार में रोपाई के 30, 45 व 60 दिन बाद देते हैं। सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक, लौह, बोरोन की कमी होने पर 1 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करना लाभदायक रहता है। पानी में घुलनशील पोषक तत्व जैसे एन.पी. के. (19:19:19 प्रतिशत) की 5-10 ग्राम मात्रा प्रतिलीटर रोपाई के 45 व 75 दिन बाद छिड़कने से भी पैदावार बढ़ती है।

बुवाई का समय व बीज की मात्रा:- मार्च-अप्रैल, जून-जुलाई व अक्टूबर-नवम्बर में व हाइब्रिड किस्मों के लिए 250 ग्राम / हैक्टेयर बीज काफी रहते हैं।

सिंचाई:- फूल व फल आते समय व फलों के विकास के लिए समय पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। गर्मियों में 5-7 दिन व सर्दियों में 7 से 12 दिन के अन्तराल पर मिट्टी के प्रकार के अनुसार सिंचाई की जरूरत नजर आने पर करते हैं। बूंद-बूंद सिंचाई व्यवस्था से भी सिंचाई कर सकते हैं। सर्दियों में कम तापक्राम होने पर सिंचाई अवश्य करें। उसके अलावा गन्धक का अम्ल एक मिली लीटर प्रतिलीटर पानी के साथ छिड़काव करने से पाला या अधिक सर्दी से बचाव होता है।

खरपतवार प्रबन्ध:-

रोपाई करने से पूर्व पेन्डामेथेलीन एक किलोग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर भूमि में नमी की उपस्थिति में 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई भी करने से भूमि में वायु संचार सही रहता है व जड़ों का विकास भी उत्तम होता है।

पादप वृद्धि नियामक:- नेफ्थीलीन एसीटिक एसिड 10 पी.पी.एम. का फूल आने पर छिड़काव करने से फूल व फल गिरते नहीं हैं।

फलों का विकास जल्दी होता है व उत्पादन अधिक होता है। फलों की तुड़ाई एवं पैदावार:-फलों की तुड़ाई जब फल पूर्ण आकार व रंग चमकदार होने पर करें। तुड़ाई में देरी करने पर फलों का रंग हल्का होता जाता है व बीज सख्त होने लग जाते हैं। पैदावार किस्म व मौसम के अनुसार 300 से 600 क्विण्टलध्हैक्टेयर तक मिल जाती है।

बुवाई का समय व बीज की मात्रा:-

मार्च-अप्रैल, जून-जुलाई व अक्टूबर-नवम्बर में व हाइब्रिड किस्मों के लिए 250 ग्राम ह हैक्टेयर बीज काफी रहते हैं।

ज्वार की खेती से पाएं दाना और चारा

ज्वार की खेती से पाएं दाना और चारा:- ज्वार को ज्यादा तादाद में किसान चारे के लिए उगाते हैं लेकिन कई इलाकों में इसकी खेती दाने के लिए भी की जाती है। ज्वार की खेती के लिए 6 से 8.30 पीएच वाली मिट्टी उपयुक्त रहती है। उचित जल निक. ासी, बेहतर जल धारण क्षमता वाली उपजाऊ मिट्टी में इसकी खेती श्रेष्ठ रहती है। देसी किस्में कमजोर जमीन में भी हो जाती है। ज्वार ऐसी फसल है जो कम पानी में भी हो जाती है तथा दो-चार दिन अगर पानी भरा भी रहे तब भी यह बची रहती है। ज्वार की खेती उत्तर भारत में खरीफ सीजन में एवं दक्षिण भारत में रबी सीजन में की जाती है। इसलिए ज्वार की मांग साल भर बनी रहती है।

खेत की तैयारी:- ज्वार की खेती के लिए खेत को कल्टीवेटर एवं हैरो दोनों से जुड़ना चाहिए ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए। अच्छी फसल के लिए कंपोस्ट खाद का प्रयोग जरूर करना चाहिए। यदि खेत साल में कुछ महीने के लिए खाली रहता हो तो हरी खाद के लिए ढैंचा लगा देना चाहिए। ढैंचा की 60 दिन की फसल को दो ढाई फीट की अवस्था पर खेत में हैरों चलाकर जोत देना चाहिए। यदि सिंचाई के लिए पानी संभव हो तो खेत में पानी लगा देना चाहिए ताकि ढैंचा जल्दी से गल जाए।

ज्वार की उन्नत किस्में:- मध्यप्रदेश के लिए ज्वार की संकर किस्म सी एस एच 5, 9, 14 एवं 18 उपयुक्त हैं। पुन्ह बीज से जमने वाली ओपी किस्मों में जवाहर ज्वार 741, जवाहर ज्वार 938, एसपीवी 1022, जवाहर ज्वार 1041 एवं एएसआर-1 जैसी अनेक किस्में बाजार में उपलब्ध रहती हैं। उत्तर प्रदेश के लिए सीएचएस 16, 14, 9, सीएसवी 13 एवं 15, वर्षा, मऊ ज1 एवं मऊ टी2 किस्म उपयुक्त हैं। शंकर किस्मों से दाना 38 कुंटल एवं चारा 140 क्वि. टल तक प्राप्त हो जाता है।

कम उपजाऊ जमीन के लिए किस्में:- यूं तो ज्वार की संकर किस्में बेहद अच्छा उत्पादन देने वाली बाजार में मौजूद हैं लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों और कमजोर जमीन में देसी किस्में अच्छा उत्पादन दे जाती हैं। इनमें उज्जैन की उज्जैन है लव कुश, विदिशा, आंवला आदि किस्मों से दाने की उपज 12 से 16 कुंटल एवं चारे की उपज 30 से 40 कुंटल तक मिल जाती है।

उर्वरक प्रबंधन:- बुवाई के समय 50 किलोग्राम नाइ. ट्रोजन 80 किलोग्राम फास्फोरस एवं 30 किलोग्राम पोटाश संस्तुत की जाती है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा ही जुताई के समय डालनी चाहिए बाकी उर्वरक पूरे डाल देने चाहिए।

जानिए लौकी की उन्नत खेती कैसे करें:- लौकी की खेती करके किसान अपनी दैनिक जरूरतों के लिए रोजाना के हिसाब से आमदनी कर सकता है.लौकी आम से लेकर खास सभी के लिए लाभप्रद है. ताजगी से भरपूर लौकी कद्दूवर्गीय में खास सब्जी है. इससे बहुत तरह के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता, हलवा व खीर, जूस वगैरह बनाने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं. आजकल मोटापा भी एक रोग बनकर उभर रहा है. इसके नियंत्रण के लिए भी लौकी का जूस पीने की सलाह दी जाती है बशर्ते यह पूरी तरह से आर्गेनिक उत्पादन हो. अगर किसी कीटनाशक या इंजेक्शन का प्रयोग करके इसे उगाया गया हो तो ये काफी नुकसान दायक हो जाती है. यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में बहुत फायदेमंद है. इस के मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट व खनिजलवण के अलावा प्रचुर मात्रा में विटामिन पाए जाते हैं. लौकी की खेती पहाड़ी इलाकों से ले कर दक्षिण भारत के राज्यों तक की जाती है. निर्यात के लिहाज से सब्जियों में लौकी खास है.

खरपतवार प्रबन्ध:- लौकी एक कद्दूवर्गीय सब्जी है. इसकी खेती गांव में किसान कई तरह से करते हैं इसकी खेती अपने घर के प्रयोग के लिए माता और बहनें अपने बिटोड़े और बुर्जी पर लगा कर भी करती हैं. बाकी किसान इसको खेत में भी करते हैं. लौकी की फसल वर्ष में तीन बार उगाई जाती है. जायद, खरीफ और रबी में लौकी की फसल उगाई जाती है। इसकी बुवाई मध्य जनवरी, खरीफ मध्य जून से प्रथम जुलाई तक और रबी सितम्बर अन्त और प्रथम अक्टूबर में लौकी की खेती की जाती है। जायद की अगेती बुवाई के लिए मध्य जनवरी के लगभग लौकी की नर्सरी की जाती है. अगेती बुबाई से किसान भाइयों को अच्छा भाव मिल जाता है.

मौसम और जलवायु:- इसके बीज को अंकुरित होने के लिए 20 डिग्री के आसपास तापमान की आवश्कयता होती है. बाकी इसके फल लगाने के लिए कोई भी सामान्य मौसम सही रहता है. अगर हम बात करें किसान के बुर्जी या बिटोड़े के फल की तो इसकी बुबाई पहली बारिश के बाद की जाती है जो की जून और जुलाई के महीने में होता है और इस पर फल सर्दियों में लगना शुरू होता है. बाकी इसको सभी सीजन में उगाया जा सकता है. बारिश के मौसम में अगर इसको कीड़ों से बचाना हो तो इसको जाल लगा कर जमीन से 5 फुट के ऊपर कर देना चाहिए. इससे मिटटी की वजह से फल खराब नहीं होते तथा इनका रंग भी चमकदार होता है.

मिटटी की गुणवत्ता और खेत की तैयारी:- लौकी की फसल के लिए खेत में पुराणी फसल के जो अवशेष हैं उनको गहरी जुताई करके नीचे दबा देना चाहिए. इससे वो खरप. तवार भी नहीं बनेंगें और खाद का भी काम करेंगें.इसको किसी भी तरह की मिटटी में उगाया जा सकता है लेकिन ध्यान रहे इसके खेत में पानी जमा नहीं होना चाहिए इससे इसकी फसल और फल दोनों ही खराब होते हैं. खेत से पानी निकासी की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए. और अगर संभव हो तो इसके खेत में गोबर की सड़ी हुई खाद कम से कम 50 से 60 कुंतल की हिसाब से मिला दें. इससे खेत को ज्यादा रासायनिक खाद पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा.इसकी तैयारी करते समय पलेवा के बाद इसकी जुताई ऐसे समय करें जबकि न तो खेत ज्यादा गीला हो और नहीं ज्यादा सूखा जिससे जुताई करते समय इसकी मिटटी भुरभुरी होकर फेल जाये. इसके बात इसमें हल्का पाटा लगा देना चाहिए जिससे की खेत समतल हो जाये और पानी रुकने की संभावना न हो.

लौकी की कुछ उन्नत किस्में:- सामान्यतः हमारे देश में जिस फसल या सब्जी की किस्म बनाई जाती है वो किसी न किसी कृषि संस्थान द्व ारा बनाई जाती है तथा वो संस्थान उस किस्म को अपने संस्थान के नाम से जोड़ देते हैं. जैसे नीचे दिए गए किस्मों के नाम इसी को दर्शाते हैं. नीचे दी गई पैदावार के आंकड़े स्थान, मौसम और जमीन की पैदावार आदि पर निर्भर करते हैं.

कोयम्बटूरें:-
तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर द्वारा उत्पादित यह किस्म उसी के नाम से भी जानी जाती है. यह जून व दिसम्बर में बोने के लिए उपयुक्त किस्म है, इसकी उपज 280

क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है जो लवणीय क्षारीय और सीमांत मृदाओं में उगाने के लिए उपयुक्त होती हैं

अर्का बहार:- यह किस्म खरीफ और जायद दोनों मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त है. बीज बोने के 120 दिन बाद फल की तुडाई की जा सकती है. इसकी उपज 400 से 450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है.

पूसा समर प्रोलिफिक राउन्ड:- इसको पूसा कृषि संस्थान द्वारा विकसित किया गया है. यह अगेती किस्म है. इसकी बेलों का बढ़वार अधिक और फैलने वाली होती हैं. फल गोल मुलायम ध्कच्चा होने पर 15 से 18 सेमी. तक के घेरे वाले होतें हैं, जों हल्के हरें रंग के होतें है. बसंत और ग्रीष्म दोंनों ऋतुओं के लिए उपयुक्त हैं.

पंजाब गोल:- इस किस्म के पौधे घनी शाखाओं वाले होते है. और यह अधिक फल देने वाली किस्म है. फल गोल, कोमल, और चमकीलें होंते हैं. इसे बसंत कालीन मौसम में लगा सकतें हैं. इसकी उपज 175 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है.

पुसा समर प्रोलेफिक लाग:- यह किस्म गर्मी और वर्षा दोनों ही मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त रहती हैं. इसकी बेल की बढ़वार अच्छी होती हैं, इसमें फल अधिक संख्या में लगतें हैं. इसकी फल 40 से 45 सेंमी. लम्बें तथा 15 से 22 सेमी. घेरे वालें होते हैं, जो हल्के हरें रंग के होतें हैं. उपज 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है.

नरेंद्र रश्मि:- यह फैजाबाद में विक. सित प्रजाती हैं. प्रति पौधा से औसतन 10.12 फल प्राप्त होते है. फल बो. तलनुमा और सकरी होती हैं, डन्ठल की तरफ गूद्दा सफेद और करीब 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है.

पूसा संदेश:- इसके फलों का औसतन वजन 600 ग्राम होता है एवं दोनों ऋतुओं में बोई जाती हैं. 60.65 दिनों में फल देना शुरू हो जाता हैं और 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है.

पूसा हाईब्रिड ३:-फल हरे लंबे एवं सीधे होते है. फल आकर्षक हरे रंग एवं एक किलो वजन के होते है. दोंनों ऋतुओं में इसकी फसल ली जा सकती है. यह संकर किस्म 425 क्वंटल प्रति हेक्टेयर की उपज देती है. फल 60.65 दिनों में निकलनें लगतें है.

पूसा नवीन:-यह संकर किस्म है, फल सुडोल आकर्षक हरे रंग के होते है एवं औसतन उपज 400.450 क्वंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है, यह उपयोगी व्यवसायिक किस्म है.

लौकी की फसल में लगने वाले कीडे:-

1-लाल कीडा (रेड पम्पकिन बीटल):-

उपायः निंदाई गुडाई कर खेत को साफ रखना चाहिए.

फसल कटाई के बाद खेतों की गहरी जुताई करना चाहिएए जिससे जमीन में छिपे हुए कीट तथा अण्डे ऊपर आकर सूर्य की गर्मी या चिडियों द्वारा नष्ट हो जायें.सुबह के समय जब ओस हो तब राख का छिड़काव करना चाहिए.

2-फल मक्खी (फ्रूट फ्लाई):-

क्षतिग्रस्त तथा नीचे गिरे हुए फलों को नष्ट कर देना चाहिए.सब्जियों के जो फल भूमी पर बढ़ रहें हो उन्हें समय समय पर पलटते रहना चाहिए.

लोकी में लगने वाले मुख्य रोग:-

चुर्णी फफूंदी

उकठा (म्लानि)

भारत सरकार ने खरीफ फसलों का समर्थन मूल्य बढाया :-

खरीफ सीजन में लगाए जाने वाली फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने घोषित कर दिया है. इसे काफी बढ़ाया गया है. उद्देश्य स्पष्ट है कि किसान यह उधान जैसी फसलों के बजाय दलहनी एवं तिलहनी फसलों को भी खेती में शामिल करें. वर्ष 2021-22 के लिए घोषित खरीफ समर्थन मूल्य को मीडिया ने भी भरपूर बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत किया है. सरकार ने छुट्टा पशुओं से नुकसान वाली इन फसलों की सुरक्षा को लेकर कोई योजना नहीं बनाई है. समर्थन मूल्य में इजाफे के चलते क्षेत्रफल बढ़ेगा लेकिन तिलहनी फसलों का क्षेत्रफल सरसों की कीमत है अच्छी रहने के कारण बढ़ना तय है.

इस बार बढ़ाई गई समर्थन मूल्य में सबसे ज्यादा तिल यानी सेसामम ₹ 452 प्रति क्विंटल, तुवर, उड़द ₹ 300 प्रति क्वि. टल, मूंगफली और नाइजर सीड के मामले में कर्म से 275 और ₹ 235 की बढ़ोतरी की गई है.

कम लागत वाली फसलों को प्रोत्साहन:-

*एमएसपी में यह इजाफा 2018-19 में उत्पादन की अखिल भारतीय औसत लागत से कम से कम 1.5 गुना किया गया है. इसका उद्देश्य किसानों को लाभ देना एवं अन्य फसलों की तरफ आकर्षित करना है. उल्लेखनीय है कि किसानों को बाजरा से लागत के सापेक्ष **85%** उड़द से 65 तू बरसे 62 प्रतिशत लाभ का अनुमान है. बाकी फसलों पर यह लाभ **50%** भी नहीं होता. धान गेहूं फसल चक्र अपनाने वाले किसानों की जमीनों की उर्वरा शक्ति कमजोर होने के अलावा माली हालत में भी गिरावट आई है. भूगर्भीय जल का दोहन होने से क्षेत्रों में जल संकट पैदा हुआ है. मोटे अनाज दलहन और तिलहन किसानों की दिशा और दशा दोनों बदल सकते हैं. सरकार इसी सोच को ध्यान में रखते हुए नीति बना रही है.*

3 योजनाओं से बढेगी किसानों की आय:-

इसके अलावा सरकार वर्ष 2018 में घोषित अंब्रेला योजना इसके अंतर्गत प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान पीएम आशा से किसानों को लाभकारी रिटर्न देगी. इस अभियान की तीन उप योजना जिनमें मूल्य समर्थन योजना, मूल्य अंतर भुगतान, योजना और निजी खरीद व भंडारण योजना शामिल है.

दालों का उत्पादन बढ़ ाने की योजना, मुफ्त मिलेंगे बीज:-

मूंग, उड़द एवं तुवर की दाल का उत्पादन आत्मनिर्भरता स्तर तक लाने के लिए सरकार ने विशेष योजना बनाई है. इसके लिए किसानों को निशुल्क बीज उपलब्ध कराना भी प्रस्तावित है. सरकार ने उच्च उपज वाली बीजों की खेतों का मुफ्त वितरण की महत्वकांक्षी योजना को मंजूरी दी है. खाद्य तेल पर महंगाई को नियंत्रित करने के लिए तिलहन का 6.37 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल तैयार करने की योजना है ताकि 120.26 क्विंटल तिलहन और 24.36 लाख क्विंटल खाद्य तेल पैदा होने की संभावना है.

कृषि उपज की सरकारी खरीद, सीजन 2021–22 के लिए सभी खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य इस प्रकार है :–मूंगफली की खेती के लिये अच्छे जल निकास वाली, भुरभुरी दोमट व बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है। अच्छी पैदावार के लिए खेतों को कम्प्यटर मांझे से समतल करा लेना चाहिए ताकि खेत के किसी हिस्से में पानी जमा न हो। जमीन में दीमक व विभिन्न प्रकार के कीड़ों से फसल के बचाव हेतु
क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टयर की दर से अंतिम जुताई के साथ जमीन में मिला देना चाहिए।

कृषि उपज की सरकारी खरीद, सीजन 2021&22 के लिए सभी खरीफ फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य इस प्रकार है :

फसल	एमएसपी 2020&21	एमएसपी 2021&22	उत्पादन की लागत 2021&22 (रुपये / क्विंटल)	एमएसपी में बढोतरी (पूर्ण)	लागत पर रिटर्न (प्रतिशत में)
धान (सामान्य)	1868	1940	1293	72	50
धान (ग्रेड ए)‘	1888	1960	–	72	–
ज्वार (हाइब्रिड)	2620	2738	1825	118	50
ज्वार (मलडंडी)‘	2640	2758	–	118	–
बाजरा	2150	2250	1213	100	85
रागी	3295	3377	2251	82	50
मक्का	1850	1870	1246	20	50
तुअर (अरहर)	6000	6300	3886	300	62
मूंग	7196	7275	4850	79	50
उड़द	6000	6300	3816	300	65
मूंगफली	5275	5550	3699	275	50
सूरजमुखी के बीज	5885	6015	4010	130	50
सोयाबीन (पीली)	3880	3950	2633	70	50
तिल	6855	7307	4871	452	50
नाइजरसीड	6695	6930	4620	235	50
कपास (मध्यम रेथा)	5515	5726	3817	211	50
कपास (लंबा रेथा)‘	5825	6025	–	200	–

यह इजाफा खेती में हो रही लागत की लगातार बढ़ोतरी है. किसान के सभी तरह के श्रम को शामिल करते हुए यह इजाफा किया गया है. ए ग्रेड के धान, मलडंडी ज्वार एवं लंबे रेशे वाली कपास जिनमें की लागत ज्यादा आती है का मूल्य निर्धारण सामान्य तरीके से ही किया गया है.

कृषि पत्रकार बनें

मेरी खेती डॉट कॉम वेबसाइट एवं यूट्यूब चैनल के लिए आप अपने क्षेत्र के सफल किसान की कहानी या वीडियो हमें भेज सकते हैं। हम उन्हें अन्य किसानों को प्रेरित करने के लिए अपने कार्यक्रम में शामिल करेंगे। किसान आपस में ज्ञान को बहुत तेजी से सीखते समझते हैं। आप यदि युवा हैं और खेती में कुछ करना या आगे बढ़ना चाहत हैं तो इस दिशा में विचार कर सकते हैं। हम आपके विचार को परवान चढ़ाने के लिए सदैव उत्साहित रहेंगे।

मूंगफली की खेती से किसान और जमीन दोनों को दे मुनाफा

मूंगफली खरीफ की मुख्य फसल है। उत्तर प्रदेश के कई इलाकों के अलावा इसकी खेती गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडू तथा कर्नाटक में होती है। अन्य राज्य जैसे मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा पंजाब में भी इसकी खेती प्रमुखता से होने लगी है। इसकी औसत उपज करीब 20 कुंतल प्रति हैक्टेयर है। इसके दानों में 22 से 28 प्रतिशत प्रोटीन, 12 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट एवं 48 से 50 प्रतिशत बसा पाई जाती है। मूंगफली जमीन और किसान दोनों को लाभ पहुंचाने वाली खेती हैं ।

मूंगफली की उन्नत किस्में:-

मूंगफली किस्में 115 से 130 दिन का समय लेती हैं। चित्रा में एक से दो दाने होते है। उक्त किस्म का उत्पादन 30 कुंतल प्रति हैक्टेयर तक मिलता है। अम्बर दो दाने वाली बंपर उजप वाली किस्म है। इससे 35 से 40 कुंतल तक उपज मिलती है। प्रकाश असिंचित अवस्था वाली किस्म है। उपज 25 कुंतल तक मिलती है। उकर्ष,एचएनजी 10, 69 व 123, जीजी 14 व 21, गिरनार 2, टीजी 37 आदि उत्तर प्रदेश के लिए अनेक किस्में हैं। उत्त. राखण्ड के लिए वीएल 1, राजस्थान हेतु एचएनजी 10, गिरनार, प्रकाश, उत्कर्ष, टीजी 37, जीजी 14 व 21, एचएनजी 69 व 23, राज 1, टीवीजी 39, प्रताप 1 व दो किस्में हैं। पंजाब हेतु एम 548, गिरनार 2, एचएनजी 10, 69 एवं 123, प्रकाश, टीजी 37, जीजी 14 एवं 21 आदि किस्में हैं। झारखण्ड के लिए बीएयू 13, गिरनार 3, विजेता आदि किस्में हैं।

जमीन की तैयारी:- मूंगफली की खेती के लिये अच्छे जल निकास वाली, भुरभुरी दोमट व बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है।

अच्छी पैदावार के लिए खेतों को कम्प्यटर मांझे से समतल करा लेना चाहिए ताकि खेत के किसी हिस्से में पानी जमा न हो। जमीन में दीमक व विभिन्न प्रकार के कीड़ों से फसल के बचाव हेतु क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टयर की दर से अंतिम जुताई के साथ जमीन में मिला देना चाहिए।

बीज दर:- मूंगफली के बीज की मात्रा किसान कम रखते हैं। इससे जल भराव आदि होने पर उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ता है। बीज की मात्रा उसके दानों के छोटेकूबड़े आकार के अनुरूप् रखें। बुवाई प्रायः मानसून शुरू होने के साथ ही हो जाती है। उत्तर भारत में यह समय सामान्य रूप से 15 जून से 15 जुलाई के मध्य का होता है। कम फैलने वाली किस्मों के लिये बीज की मात्रा 75-80 एवं ज्यादा फैल्ने वाली किस्मों के लिये 60-70 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज का उपयोग करना चाहिए। बोने से 10-15 दिन पहले गिरी को फलियों से अलग कर लेना चाहिए। बीज को बोने से पहले 3 ग्राम थाइरम या 2 ग्राम मेन्कोजेब या कार्बेण्डिजिम दवा प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। दीमक और सफेद लट से बचाव के लिये क्लोरोपायरिफास (20 ई.सी.) का 12.50 मि.ली. प्रति किलो बीज का उपचार बुवाई से पहले कर लेना चाहिए। मूंगफली को कतार में बोना चाहिए। कम फैलने वाली किस्मों के लिये कतारों के मध्य की दूरी 30 से.मी. तथा फैलने वाली किस्मों के लिये 45 से.मी.रखें। पौधों से पौधों की दूरी 15 से. मी. रखनी चाहिए। बीज 5-6 से.मी. की गहराई पर बोना चाहिए।

उर्वरक प्रबंधन:- उर्वरकों का प्रयोग भूमि की किस्म, उसकी उर्वराशक्ति, मूंगफली की किस्म, सिंचाई की सुविधा आदि के अनुसार होता है। मूंगफली दलहन परिवार की तिलहनी फसल होने के नाते इसको सामान्य रूप से नाइट्रोजन ६ ारी उर्वरक की आवश्यकता नहीं होती, फिर भी हल्की मिट्टी में शुरूआत की बढ़वार के लिये 15-20 किग्रा नाइट्रोजन तथा 50-60 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हैक्टर के हिसाब से देना लाभप्रद होता है। अधिक उत्पादन के लिए अंतिम जुताई से पूर्व भूमि में 250 कि.ग्रा.जिप्सम प्रति हैक्टर के हिसाब से मिला देना चाहिए। नीम की खल के प्रयोग का मूंगफली के उत्पादन में अच्छा प्रभाव पड़ता है। अंतिम जुताई के समय 400 कि.ग्रा. नीम खल जुताई में मिलाना चाहिए।

सिंचाई प्रबंधन:-

इसमें सिंचाई की जरूरत बरसाती सीजन होने के नाते नहीं पड़ती। यदि पौधों में फूल आते समय सूखे की स्थिति हो तो उस समय सिंचाई करना जरूरी है। फलियों के विकास एवं गिरी बनने के समय भी भूमि में पर्याप्त नमी जरूरी है। मूंगफली की फलियों का विकास जमीन के अन्दर गुच्छों में होता है। अतः खेत में बहुत समय तक जल भराव न रहे।

खरपतवार नियंत्रण :-

खरपतवार नियंत्रण हर फसल के उत्पादन पर बेहद असर डालता है चूंकि यदि खेत में खरपतवार बने रहते हैं तो वह पौधे के हिस्से की खराक चट कर जाते हैं और मुख्य फसल कमजोर रह जाती है। इनसे बचाव के लिए कम से कम दो बार निराई गुड़ाई करें। पहली फूल आने के समय दूसरी बार 2-3 सप्ताह बाद। जिन खेतों में खरपतवारों की ज्यादा समस्या हो तो बुवाई के 2 दिन बाद तक पेन्डीमेथालिन नामक खरप. तवारनाशी की 3 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

किसानों पर सरकार मेहरबान, किया 2 करोड़ के लोन का ऐलानें:-

किसान भाइयों तीन नये कृषि कानूनों को लेकर चल रहे विवाद में सरकार ने किसानों को संतुष्ट करने के लिए अनेक योजनाओं की घोषणा की है। तीन नये कृषि कानूनों के विरोध में किसानों द्वारा लम्बे समय से आंदोलन चल रहा है। इसका असर देश की राजनीति पर भी पड़ा है। केन्द्र सरकार में सत्तारूढ़ दल को किसानों के कोप का शिकार होना पड़ा है। अन्नदाता के गुस्से को शांत करने के लिए सरकार ने मंत्रिमंडल के विस्तार के तत्काल बाद कृषि और कृषि मंडियों से जुड़ी अनेक लाभकारी योजनाओं का ऐलान किया है। साथ ही दक्षिण भारत के नारियल किसानों को भी खुश करने का प्रयास किया गया है।

एक लाख करोड़ रुपये किसानों तक पहुंचाये जायेंगे:- केन्द्रीय मंत्रिमंडल में किये गये नये बदलाव के बाद पहली प्रेस कांफ्रेंस में कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने किसानों से जुड़ी अनेक लाभकारी योजनाओं का ऐलान करते हुए बताया कि सरकार पूरी तरह से किसानो के हित के लिए समर्पित है। कृषि मंत्री श्री तोमर ने बताया कि विस्तार के बाद केन्द्रीय मंत्रिमंडल की पहली बैठक में किसानों से जुड़ा सबसे अधिक महत्वपूर्ण फैसला यह लिया गया कि एक लाख करोड़ रुपये मंडियों के माध्यम से किसानों तक पहुंचाए जाएंगे।

कौन-कौन होंगे अधिकृत:-

सरकार ने किसानों तक एक लाख करोड़ रुपये पहुंचाने की जो योजना बनाई है, उसके बारे में कृषि मंत्री श्री तोमर ने बताया कि कृषि उपज बाजार समिति (एपीएमसी) यानी कृषि मंडियों के माध्यम से यह राशि किसानों तक पहुंचायी जायेगी। केन्द्र सरकार द्वारा जारी यह इन्फ्रास्ट्रक्चर राशि उपयोग करने के लिए राज्य सरकारों, कोआपरेटिव फेडरेशनों, स्व सहायता समूहों और एपीएमसी को अधिकृत किया गया है। ये किसानों की तमाम समस्याओं को निपटाने का काम करेंगी।

इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड से किसानों को अनेक फायदे मिलेंगे, आय बढेगी :- केन्द्र सरकार के तीन कृषि कानूनों का विरोध कर रहे आंदोलनकारी किसानों को पूरा भरोसा दिलाते हुए कृषि मंत्री नरेन्द्र तोमर ने कहा कि सरकार द्वारा लाये गये नये कानूनों से कृषि मंडियां समाप्त होने नहीं जा रही हैं और न ही एपीएमसी एक्ट पर कोई प्रभाव पड़ने जा रहा है। बल्कि सरकार किसानों की आय को बढ़ाने और उसकी उपज का सही मूल्य दिलाने के लिए कृषि मंडियों को पहले से अधिक मजबूत करने के लिए संकल्पित है। एपीएमसी के माध्यम से किसानों की भलाई के लिए ही यह इन्फ्रास्ट्रकर फंड जारी किया गया है। इसका पूरा लाभ किसानों को मिलेगा। उन्होंने दावा किया कि जहां इस इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड के इस्तेमाल से एपीएमसी मंडियों अनेक संसाधन बढ़ेंगे, वहीं इससे किसानों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अनेक फायदे मिलेंगे और उनकी आय बढ़ेगी।

ब्याज में छूट वाला दो करोड़ तक का लोन मिलेगा :-

किसानों के लिए सबसे अधिक लाभकारी योजना का ऐलान करते हुए कृषि मंत्री ने बताया कि सरकार ने किसानों के समूह, व कृषि से जुड़े स्टार्टअप को 2 करोड़ रुपये तक के लोन पर 3: ब्याज की छूट देने की व्यवस्था की है। श्री तोमर का कहना था कि इस तरह के ऋण की व्यवस्था में एक सीमा भी तय की गयी है। फिलहाल एक क्षेत्र में इस तरह के ऋण लेने वाले समूहों व स्टार्टअप की अधिकतम संख्या 25 तक हो सकती है। इन सभी को 2 करोड़ रुपये अलग-अलग लोन दिये जाएंगे और ब्याज में छूट मिलेगी। उन्होंने बताया कि कृषि उपज मंडी के क्षेत्र में किसानों के लिए एक से ज्यादा परियोजनाएं लाई जाएंगी और उन्हें ऐसे लोन दिए जाएंगे।

नारियल बोर्ड में बडा बदलाव:-

कृषि मंत्री ने यह भी बताया कि दक्षिण भारत में नारियल की खेती करने वाले किसानों के फायदे को ध्यान में रखते हुए वर्तमान नारियल एक्ट में महत्वपूर्ण संशोधन किए गए हैं। सरकार ने फैसला लिया है कि अब नारियल बोर्ड बनाया जाएगा।

कृषि मंत्री ने कहा कि नारियल की खेती को बढ़ावा देने के लिए 1981 में नारियल विकास बोर्ड बनाया गया था। इस बोर्ड के एक्ट में वर्तमान समय की नारियल की खेती को देखते हुए कई तरह की खामियां हैं, इन सभी खामियों को दूर दिया जायेगा। इस बोर्ड का अध्यक्ष किसानों के बीच के किसी व्यक्ति को बनाया जायेगा, जिससे किसान अपनी बात कह सकें और बोर्ड अध्यक्ष किसानों की बाद को आसानी से समझ सके। इस बोर्ड के शासकीय अधिकार के लिए चीफ एग्जीक्यूटिव अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किया जायेगा। कृषि मंत्री ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा इस बोर्ड के छह नामित सदस्य होंगे। दक्षिण भारत के नारियल उत्पादक राज्यों के अलावा आंध्र प्रदेश और गुजरात भी इस बोर्ड के सदस्य होंगे।

किसानों के लिए बहुत किफायती हैं न्यू हॉलैंड के ये ट्रैक्टर